Journal of Research in Education

(A Peer Reviewed and Refereed Bi-annual Journal)

(SJIF Impact Factor 3.575)

St. Xavier's College of Education

(Autonomous)

Digha Ghat, Patna, Bihar - 800011

VOL.11, No.2 | DECEMBER, 2023

- *Tadayon Nabavi, Razieh & Bijandi, Mohammad. (2012). Bandura's Social Learning Theory & Social Cognitive Learning Theory.*
- *Tadesse, S., & Muluye, W. (2020). The Impact of COVID-19 Pandemic on Education System in Developing Countries: A Review.*
- *Open Journal of Social Sciences, 8, 159-170. https://doi.org/10.4236/jss.2020.810011.*
- *Team, G. E. M. R., & U. (2023). Global Education Monitoring Report. UNESCO Publishing.*
- *Thomas (2020). COVID-19 Pandemic and Primary Education in India: Does It Cause More Inequality Between Public and Private Schools?*
- *Yu-Chu Yeh. (2010). Analyzing Online Behaviors, Roles, and Learning Communities via Online Discussions. Journal of Educational Technology & Society, 13(1), 140–151. http://www.jstor.org/stable/jeductechsoci.13.1.140*

Journal of Research in Education ISSN (P): 2347-5676 | ISSN (O) 2582-2357
DECEMBER - 2023 | VOL.11, No.2

डॉ0 मंजू गुप्ता
सह–आचार्य
शिक्षक शिक्षा विभाग
दयानन्द महिला प्रशिक्षण
महाविद्यालय, कानपुर,
उत्तर प्रदेश–208 012

5

डॉ० राधाकृष्णन जी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता

सार

स्वतन्त्र भारत के द्वितीय राष्ट्रपति एवं देश के सर्वोच्च सम्मान, 'भारत रत्न' के अतिरिक्त 'ऑर्डर ऑफ मेरिट' 'नाइट बैचलर' एवं 'टेम्पलटन' पुरस्कार से सम्मानित उच्चकोटि के दार्शनिक, लेखक, धर्मशास्त्री एवं प्रख्यात शिक्षाविद डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के शैक्षिक विचार वर्तमान शिक्षा प्रणाली को समुचित दिशा देने में आज भी उल्लेखनीय भूमिका अदा कर सकते हैं। उन्होंने ऐसी शिक्षा पर बल दिया जिससे विद्यार्थियों की आत्मोन्नति हो, वे ज्ञान प्राप्ति के क्षेत्र में आत्म-निर्भर बने तथा जीवन की चुनौतियों से निपटने में स्वयं सक्षम हों। उनका दर्शन भारतीय संस्कृति के प्रति उदार दृष्टिकोण, बहुजन हिताय बहुजन सुखाय तथा विश्व बन्धुत्व की भावना से ओत-प्रोत रहा है। वर्तमान समय में उनके मानवतावादी दृष्टिकोण को अपनाये जाने की अत्यन्त आवश्यकता है।

मूल शब्दः *सर्वपल्ली राधाकृष्णन, शिक्षाविद, विश्व-बन्धुत्व, प्रासंगिकता।*

प्रस्तावना :

आधुनिक काल के दार्शनिकों एवं शिक्षाविदों में डॉ. राधाकृष्णन जी का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। आप शिक्षक से लेकर अनेक विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं विदेशी विश्वविद्यालय (ऑक्सफोर्ड) में प्रोफेसर के साथ-साथ देश के सर्वोच्च पद -'राष्ट्रपति' पद पर आसीन हुए तथा आपको देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' के अतिरिक्त 'ऑर्डर ऑफ मेरिट' 'नाइट बैचलर' और 'टेम्पलटन' पुरस्कार से नवाजा गया।

उच्चकोटि के दार्शनिक, लेखक, धर्मशास्त्री एवं प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ० राधाकृष्णन जी के शैक्षिक विचार वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था को समुचित दिशा देने में आज भी महती भूमिका अदा कर सकते हैं। इनके अनुसार शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। अतः सम्पूर्ण विश्व को एक ही इकाई मानकर शिक्षा का प्रबंधन करना चाहिए। शिक्षा मात्र सूचनाओं को प्रदान करना नहीं है, यह संवेगों का प्रशिक्षण है। अतः अपेक्षित है कि शिक्षा, व्यक्ति की भावनाओं को सुसंस्कारित कर उनकी व्यवहार सम्बन्धी आदतों को सुधारे। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में निहित गुणों को विकासोन्मुख करना है जिससे वे उचित-अनुचित, सत्य-असत्य, नैतिक-अनैतिक तथा ज्ञान-अज्ञान में विवेकपूर्ण अन्तर कर सकें तथा जीवन के सैद्धान्तिक व व्यावहारिक दोनों पक्षों में सामंजस्य बिठाते हुए नैतिक जीवन जी सकें।

इसके विपरीत वर्तमान शिक्षा मात्र पुस्तकीय ज्ञान व रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करने का साधन मात्र रह गयी है। वास्तव में शिक्षा वह यन्त्र है जिसके माध्यम से एक राष्ट्र प्रगति व विकास के पथ पर अग्रसर होता है। अतः आज ऐसी शिक्षा पर बल दिये जाने की आवश्यकता है जो ज्ञानार्जन और जीविकोपार्जन के साथ-साथ मनुष्य का आध्यात्मिक विकास कर सके।

वर्तमान भौतिकतावादी विचारधारा आध्यात्मिकता से दूर होती जा रही है जिससे मनुष्य केवल आत्मकेन्द्रित व स्वार्थी होता जा रहा है। अतः वर्तमान अवसादग्रस्त जनमानस के कल्याण के उद्देश्य से ही प्रस्तुत समस्या का चयन शोध-पत्र हेतु किया गया है।

Journal of Research in Education ISSN (P): 2347-5676 | ISSN (O) 2582-2357
DECEMBER - 2023 | VOL.11, No.2

अध्ययन के उद्देश्य-

१. डॉ० राधाकृष्णन जी के व्यक्तित्व वं जीवन दर्शन का अध्ययन करना।

२. डॉ० राधाकृष्णन जी के शिक्षा दर्शन के विविध पक्षों का अध्ययन करना।

३. डॉ० राधाकृष्णन जी के शिक्षा सम्बधी विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता।

परिसीमनः

प्रस्तुत शोध-पत्र में श्री राधाकृष्णन जी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का ही अध्ययन किया गया है।

द्वितीयक स्रोत के रूप में डॉ० राधाकृष्णन से सम्बन्धित अन्य लेखकों के समीक्षात्मक ग्रंथों, पुस्तकों एवं लेखों आदि की सहायता ली गयी है।

प्रस्तुत समस्या के संदर्भ में यादव, शिवशंकर (२००६) ने डॉ० एस. राधाकृष्णन एवं डॉ० ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया। अप्रकाशित लघुशोध प्रबन्ध, सी० एस० जे० एम. विवि-कानपुर। इसी प्रकार यादव, पूनम (२००६) ने डॉ० राधाकृष्णन और डॉ० ऐनीबीसेण्ट के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया, अप्रकाशित लघुशोध प्रबन्ध, डॉ० राम मनोहर लोहिया, अवध विवि. फैजाबाद। पाण्डेय, अंजनी कुमार (२०११) ने सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया। इसी प्रकार उर्मिला, (२०१६) ने डॉ० राधाकृष्णन एवं गिजुभाई बघेका के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया, लघुशोध नेहरू ग्राम भारती, विवि प्रयागराज।

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन समकालीन प्रमुखतम भारतीय शिक्षा दार्शनिकों में से एक थे जिन्होंने एक शिक्षक के साथ ही विभिन्न पदों पर शिक्षा संस्थाओं में बहुत लम्बे समय तक कार्य करके शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं को निकट से देखा व समझा था। विभिन्न भारतीय व पाश्चात्य विश्वविद्यालयों में अनेक विषयों के प्राध्यापक के रूप में और अनेक विश्वविद्यालयों के उपकुलपति की हैसियत से आपने शिक्षा की प्रक्रिया, उद्देश्य व विभिन्न पहलुओं का गहन अध्ययन किया। जहाँ एक ओर आप भारतीय दर्शन में गहन अंर्तदृष्टि रखते थे, वहीं दूसरी ओर प्राचीन, यूनानी, आधुनिक पाश्चात्य एवं समकालीन दर्शनों में भी उनकी पैठ किसी से कम नहीं थी। भारत के उपराष्ट्रपति के रूप में, देश के राजदूत के रूप में, विश्व के अनेक देशों की शैक्षिक यात्राएं करने के कारण डॉ० राधाकृष्णन के विचारों में अन्तर्राष्ट्रीयता तथा विभिन्न संस्कृतियों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

डॉ० राधाकृष्णन् जी का जीवन दर्शन–

राधाकृष्णन् जी के अनुसार जीवन का लक्ष्य सांसारिक आनन्द उठाना मात्र नहीं है बल्कि आत्मा को शिक्षित करना है। उनके अनुसार दर्शन एक रचनात्मक विद्या है। इसका उद्देश्य जीवन की व्याख्या करना नहीं वरन जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना है। उनका मानना है कि एक शताब्दी का दर्शन ही दूसरी शताब्दी का सामान्य ज्ञान होता है।

डॉ० राधाकृष्णन आध्यात्मिक मानवतावाद में विश्वास करते थे। उनके मतानुसार सभी ईश्वर के अंश हैं। अतः सभी बराबर हैं। यदि कोई मानव किसी दूसरे मानव से घृणा करता है तो वह ईश्वर से भी घृणा करता है। वे नैतिक मूल्यों को आध्यात्मिक आधारों पर स्थापित करना चाहते थे।

डॉ० राधाकृष्णन जी का शिक्षा दर्शन–

शिक्षा के सम्बन्ध में राधाकृष्णन जी के विचार अत्यन्त प्रगतिशील थे। उनके अनुसार शिक्षा द्वारा मस्तिष्क को इस प्रकार प्रशिक्षित करना चाहिए कि मानव ऊर्जा और भौतिक संसाधनों में सामंजस्य विकसित किया जा सके।

डॉ० राधाकृष्णन जी ने दर्शन, शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षा के माध्यम आदि विभिन्न पहलुओं पर व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है। वे लोकतंत्र के समर्थक थे। उनका मत था कि सच्ची शिक्षा चरित्र की शिक्षा है। उन्होंने विद्यार्थियों में ऐसे चारित्रिक गुणों के विकास पर बल दिया जिससे उनमें लोकतांत्रिक गुणों का विकास हो और वे राष्ट्र के विकास में अपना सहयोग दे सकें।

उनके शिक्षा दर्शन में नैतिक, धार्मिक एवं 'बहुजन हिताय. बहुजन सुखाय' सम्बन्धी विचारों का सामंजस्य मिलता है। उनका शिक्षा दर्शन भारतीय संस्कृति के प्रति उदार दृष्टिकोण तथा विश्व–बन्धुत्व की भावना से ओतप्रोत है। उनके अनुसार शिक्षा द्वारा ही शिष्ट, चरित्रवान तथा स्वावलम्बी नागरिक तैयार किये जा सकते हैं। उनके शिक्षा दर्शन में समकालीन भारतीय दर्शन की नव्यवैदान्तिक विचारध ारा की पूर्ण अभिव्यक्ति मिलती है।

श्री राधाकृष्णन जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की अन्तर्निहित योग्यताओं व संकल्प शक्ति का विकास करना तथा वर्गरहित मानवतावादी समाज का निर्माण करना है। शिक्षा द्वारा बालकों के चरित्र निर्माण, नेतृत्व क्षमता व विश्व–बन्धुत्व की भावना का

विकास किया जाना चाहिए। इन्होंने शिक्षा द्वारा बालक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास (शारीरिक, मानसिक, नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक) पर बल दिया है। इनके अनुसार, शिक्षा का लक्ष्य छात्रों में ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना और निरंतर सीखते रहने की प्रवृति का विकास करना है।

राधाकृष्णन जी ने शिक्षा की पाठ्यचर्या में समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया है। वे दर्शन और धर्म दोनों को शिक्षा से संदर्भित करते थे। उन्होंने एक ओर वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा तथा दूसरी ओर मानविकी शिक्षा पर बल दिया है। उनका मानना था कि आत्म–साक्षात्कार की प्रक्रिया तभी पूर्ण हो सकती है जबकि विद्यार्थी का सर्वतोन्मुखी विकास हो।

शिक्षण विधियों में आपने वैदिक कालीन शिक्षण विधियों श्रवण–मनन के साथ–साथ प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द विधि पर बल दिया है। शिक्षा माध्यम के रूप में उन्होंने मातृभाषा व संस्कृत को महत्व दिया।

शिक्षक के सम्बन्ध में आपका विचार है कि शिक्षक अपने व्यक्तित्व से विद्यार्थियों के मस्तिष्क में ज्ञान की धारा प्रवाहित करता है। उनके अनुसार शिक्षक वह नहीं है जो छात्रों के मस्तिष्क में तथ्यों को जबरने डाले, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे। उनका कहना था कि शिक्षक का काम है ज्ञान को प्राप्त करना और फिर उसे बाँटना। उसे ज्ञान का दीपक बनकर चारो ओर अपना प्रकाश विकीर्ण करना चाहिए।

विश्वविद्यालय के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुऐ, उन्होंने कहा कि इमारतें विश्वविद्यालय नहीं है। अध्यापक, विद्यार्थी और ज्ञान का अर्जन विश्व–विद्यालय की आत्मा है। विश्वविद्यालय राष्ट्र के बौद्धि क जीवन के पवित्र मन्दिर व एकत्व साधना के मुख्य अभिकर्ता हैं।

स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में राधाकृष्णन जी प्राचीन भारतीय आदर्श– 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' से प्रेरित हैं। वे स्त्रियों को सभ्यता व संस्कृति का वाहक व राष्ट्र के उत्थान हेतु भावी कर्णधारों को जन्म देने वाला मानते हैं। वे स्त्रियों को भाषा, साहित्य, गृहकला, विज्ञान आदि की शिक्षा देने के साथ–साथ धर्म–व दर्शन की शिक्षा का समर्थन करते हैं। उनके अनुसार–''यदि स्त्रियों को शिक्षित किया जायेगा तो वे पूरे राष्ट्र को शिक्षित कर देंगी क्योंकि वे जिन सन्तानों को जन्म देगी वे सही मायने में शिक्षित होकर राष्ट्र को प्रगति की ओर अग्रसर करने में सहयोग करेंगे।

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता :

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी भारतीय शिक्षा के एक महान कर्णधार के रूप में अपनी पहचान रखते हैं जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया। स्वतन्त्रता के पश्चात उच्चशिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन के उद्देश्य से ही उनकी अध्यक्षता में 'विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग' का गठन किया गया जिसे राधाकृष्णन आयोग भी कहा जाता है। उनके शैक्षिक विचार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को समुचित दिशा देने में आज भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते यथा-

जीवन दर्शन सम्बधी विचारों की प्रासंगिकता-

डॉ० राधाकृष्णन जी का दर्शन आध्यात्मिक विचारों से ओत-प्रोत रहा है। वे हिन्दू धर्म में अटूट आस्था रखते थे। इस सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है-हिन्दुत्व गति है न कि स्थिति, प्रक्रिया है न कि परिणाम, एक विकासशील परम्परा है न कि निश्चित ईश्वरीय ज्ञान । उनका विश्वास था कि आध्यात्मिक मानतावाद का दर्शन विश्व-समाज के आदर्श को जन्म देता है। वे विश्वशान्ति की स्थापना के पक्षधर थे। उनका दर्शन भारतीय संस्कृति के प्रति उदार दृष्टिकोण, बहुजन हिताय बहुजन सुखाय तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना से ओत-प्रोत रहा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी सर्वोपरि आवश्यकता है क्योंकि २१ वीं सदी के मानव जीवन में असंख्य प्रकार के विघटन और समस्याये हैं किन्तु सबसे बड़ा संकट मानव जीवन, के अस्तित्व का है। इस प्रकार उनका मानवतावादी दृष्टिकोण वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है।

शिक्षा दर्शन सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता :

शिक्षा की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि- शिक्षा का अर्थ यह नहीं है कि मस्तिष्क में ऐसी सूचनाएं एकत्रित कर ली जाएं जिसका जीवन में कोई इस्तेमाल ही न हो। हमारी शिक्षा जीवन-निर्माण, व्यक्ति-निर्माण और चरित्र निर्माण पर आधारित होनी चाहिए। उन्होंने ऐसी शिक्षा पर बल दिया जिससे विद्यार्थियों की आत्मोन्नति हो, वे ज्ञान-प्राप्ति में आत्म-निर्भर तथा चुनौतियों से निपटने में स्वयं सक्षम हों। इस प्रकार शिक्षा के सम्बन्ध में उनके विचार आज भी प्रासंगिक है।

हमारी वर्तमान शिक्षा पुस्तकीय ज्ञान तथा रोजगार प्रदान करने का साधन मात्र रह गयी है जबकि आज आवश्यकता इस बात की है कि वर्तमान शिक्षा फलक को थोड़ा विस्तृत किया जाए और उसे मात्र ज्ञानार्जन अथवा जीविकोपार्जन का साधन बनने से रोका जाए एवं शिक्षा द्वारा व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास पर भी बल दिया जाए। इस प्रकार विवेकानंद जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के भौतिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास भी होना चाहिए जो आज भी प्रासंगिक है।

राधाकृष्णन जी ने शिक्षा की पाठ्यचर्या में समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक विषयों के साथ-साथ मानविकी शिक्षा पर भी बल दिया है। इसी प्रकार शिक्षण विधियों के क्षेत्र में श्रवण, मनन व स्वाध्याय को महत्व दिया है जो कि वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है।

राधाकृष्णन जी ने सबसे ज्यादा बल शिक्षक के चरित्र व उसके आचरण पर दिया है। पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भाषण में उन्होंने कहा था कि ''किसी विश्वविद्यालय की महानता या गरिमा का निर्धारिण उसकी इमारतों या उपकरणों से नहीं होता वरन उसमें कार्यरत प्राध्यापकों की विद्वता तथा चरित्र से होता है।'' उनके शब्दों में ''हमारे देश में शिक्षक को गुरु या आचार्य कहते हैं। आचार्य का तात्पर्य ही उस व्यक्ति से है जिसका आचरण उच्च हो।'' वर्तमान में भी उनके शिक्षक सम्बन्धी विचार नितान्त प्रासंगिक हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि डॉ० राधाकृष्णन शिक्षा द्वारा ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना चाहते हैं जो जातिवाद, वर्गवाद, क्षेत्रवाद, प्रान्तवाद, सम्प्रदायवाद तथा राष्ट्रवाद से ऊपर उठकर विश्व को अपना परिवार समझें तथा स्वयं को विश्व-कुल का नागरिक मानें। उनके अनुसार हमें विश्व-एकता के लिए कार्य करना चाहिए। हमें एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण करना चाहिए जिसका विश्वास आध्यात्मिक जीवन की महानता, पवित्रता तथा मानवता के प्रति प्रेम और शान्ति में हो। इस प्रकार राधाकृष्णन जी शिक्षा द्वारा मनुष्य में ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना का विकास कर उसे विश्व-मानव के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहते थे जो आज भी पूर्णतया प्रासंगिक है

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

- *पाण्डेय, डॉ० रामशकल : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा (२००५)*
- *डॉ० राधाकृष्णन : भारतीय संस्कृति कुछ विचार।*
- *पॉल आर्थर : द फिलॉसफी ऑफ सर्वपल्ली राधाकृष्णन, ट्यूडर पब्लिकेशन कं. न्यूयार्क (२०१५)*
- *भण्डारी, डी०आर० : डॉ० राधाकृष्णन की देन, प्रज्ञा (सर्वपल्ली राधाकृष्णन की स्मृति में) काशी हिन्दू वि.वि. पत्रिका, अंक-३४, भाग-२, २०१५*
- *Dash, B. N. & Nibedita : Thoughts and Theories of Indian Educational Thinkers. Dominant Publishers & Distributors. New Delhi, 2009*
- *Joshi, Sunila : Great Indian Educational Thinkers. Authors Press. Delhi. 2006*

Journal of Research in Education ISSN (P): 2347-5676 | ISSN (O) 2582-2357
DECEMBER - 2023 | VOL.11, No.2

Dr. Kotra Balayogi
Assistant Professor,
Unity College of Teacher Education,
Dimapur, Nagaland- 797 112
Email- drkotrayogi@uctedimapur.org

6

National Education Policy (NEP) 2020: Holistic, Multidisciplinary and Technology Based Education

Abstract

The National Education Policy (NEP) 2020 is a comprehensive and inclusive policy document that seeks to transform India into a knowledge superpower, and it has been designed to enable all individuals to acquire the knowledge, skills, and values necessary to lead a productive and fulfilling 21st century life. It seeks to foster a more equitable, inclusive, multidisciplinary, techno-based, and holistic education system that is responsive to the needs of present-day students. It seeks to provide universal and equitable access to quality education for all, regardless of personal, social, and economic backgrounds. The NEP 2020 also seeks to promote the use of technology to enhance the efficiency and effectiveness of the education system. The policy also focuses on the development of the human capital of the country by providing access to quality education for all. The NEP 2020 has set out to create a system that is responsive to the changing needs of society and capable of meeting all the demands of the upcoming future. In order to achieve this, the policy proposes a paradigm shift in the way education is delivered and managed. The NEP 2020 also seeks to provide access to quality education to every Indian. In this regard, the policy seeks to promote a culture of learning, provide opportunities